जितिया पावैनके कथा या किंवदन्ती

भुलाइ चौधरी, *थारु संस्कृतिविद्*

जितिया पावैन बियाह भेल थारु महिला सब के बहौत भाडी पावैन चियै। कहबी छै : "जितिया पावैन बड भारी। जितिया पावैन के प्रमुख विशेषता छै जे ब्रतालु महिला निर्जला निराहर उपास मे बैठे और जितिया कथा अनिबार्यरुप मे श्रवण करे । एकटा बुझल बात छै जे कोनो भी पूजा मे कथा पक्ष अनिबार्य रहैछै चाहे सत्यनरायण भगवान के पूजा हेवे या सन्तोषी माई के। बिना कथा पूजा पूर्ण नै मानल जाइछै।

संक्षेप मे थारु भाषा मे जितिया कथा (थारु पौराणिक अवधारना अनुसार)

जितिया कथा के दुई भाग हैछैः- भाग १: जितिया ब्रत के उत्पति इतिहास कथा या

भाग २:- जितिया व्रत के महत्व (चिल्हौरनी या स्यारनी के कथा)

येबकी बेर जितिया कथा के भाग १ परहु वा श्रवण कर।

भाग १:- जितिया ब्रत के उत्पति इतिहास कथा

प्राचीन समय मे भारतीय उत्तरी उपप्रायद्वीप मे सालिवाहन नाम के राजा रहै। ऊ बहौत वीर, पराक्रमी, प्रजावत्सल या धर्मात्मा राजा रहै। रानी के नाम सहाय रहै। राजा के मसवासी नाम के एकटा बेटी रहै। कहै छै जेहनं बाप तेहनं बेटी। मसवासी वोहो बापे नहाईत धर्मात्मा रहै। ऊ बहौत सुन्दरी तथा दुलारी रहै। समय चक्र अनुसार मसवासी जवान हेवे लाग्लै। मसवासी के बियाह जोग देख्के राजा के बेटी के बियाह कराबै के चिन्ता हेबे लाग्लै। राज दरबार मे मसवासीले राजकुमार खोजै के बातचीत हेबे लाग्लै। यी बात जब मसबासी के मालूम भेलै त मसबासी महताईर (रानी) लग गेलै आ कहल्कै मैया हमर ले राजकुमार नै खोजै। हम बियाह नै करबौ। बरु राजदरबार से बाहर हमरा एकटा कुट्टी बनादे। हम वहै कुट्टी मे रहनै या भगवान के भजन-भाव करैत रहबै।

मसबासी के बात सुईनके रानी आश्चर्यचकित भ्यागेलै। रानी बेटी के बहौत सम्झैल्कै कि कथिले ने बियाह करबिही ? बियाह तोरेटा नै की सब के हैछै। यी कोनो खराब बात चियै। यी संसार के एकटा रीत चियै। तोहे यी जिध्द नै करै। मगर मसबासी आपन बात मे अड्ल रैहगेलै। तब राजा राजदरबार से बाहर मसबासी के ईच्छे अनुसार एकटा कुट्टी बन्या देल्कै या तब से राजकुमारी वहै कुट्टी मे रहेलाग्लै। ऊ नित दिन भिनसरे उठै या सुरुज उगै से पहिने लह्याके कुट्टी मे चैल आबै या भगवान के भक्ति मे लाईगज्या।

एक दिन के बात चियै। मसबासी के उठै मे कन्हिक देर भ्यागेलै। मसबासी हबर-हबर लदी मे गेलै, लहैल्कै आ ल्हायाके घुमलै। मगर तातैक मे सूर्य उदय भ्यागेलै। सूर्य के प्रकाश से मसबासी के पुरा शरीर प्रकाशित भ्यागेलै जै कारण मसबासी गर्भवती भ्यागेलै। मसबासी कुट्टी मे येलै या नित दिन नहाईत भगवान के भक्ति मे लाईग गेलै।

दिने-दिन मसबासी के देह मे परिवर्तन हेवे लाग्लै। चाईर-पाँच महिना मे एक कान, दुई कान मैदान, सब के मालुम भ्यागेलै कि मसबासी गर्भवती छै। राजा के यी बात सुईनके बहौत दुःख लाग्लै। राजा मने-मन सोचे कि जकरे डर रहे आखिर स्याह भ्याल। राजा रिस से मसबासी के बहौत गाली-ब्यजती केल्कै, मगर तैयो गाईर ब्यजती सहैत मसबासी दशम महिना मे एकटा बिल्क्षण प्रतिभा के बच्चा के जलम देल्कै। कुछेक समय मे बच्चा बैढके ढेरवा भेलै या कुट्टी के बाहर अन्य छौरा सब के संगे खेलाईले ज्या लाग्लै।

मसवासी के बेटा सब चीज मे दोसर साथी सब से तेज रहै। ऊ ने खेल मे, ने परहै मे, कोनो चीज मे आपन साथी सब के नै जिते दै। सब साथी वोकर से हारले रहै। तहै से साथी सब वोकर नाम जितुवा राख्ने रहै। साथी सब जितुवा से डाह क्याके जितुवा के हराबैले आ वोकर मजाक करैले सब गोरे एकटा खेल के रचना केल्कै। खेल मे अन्हरा- अन्हरी के डाईरह काटलक। खेल के शर्त रहै जे महताईर के नाम ल्याके घर मे ढुके आ बाप के नाम ल्याके घर से बाहर हेवे। जितुवा, वोहो खेल मे भाग लेल्कै। वोहो महताईर के नाम ल्याके खेल के घर मे ढुकलै, मगर बाप के नाम त थाह नै रहै जे कहतै, तहै से नियम अनुसार ऊ घरे मे ढुकले रैह गेलै। साथी सब जितुवा के कोई खेल घर से बहराबैले कहै त कोई जिस्कावै कि बाप नै छौ ? कि तोहे अनेर्वा चिही ? या हाँसे। यहै मे से जितुवा के एकटा हितैसी साथी दौईरके मसबासी के कहैले कुट्टी मे गेलै या सब बात कहल्कै। मसबासी के यी बात सुईनके बहौत दुःख लाग्लै। मसबासी दौईरके खेल घर येलै या जितुवा के बाप के नाम सूर्य कहैले कहल्कै या तब जितुवा बाप के नाम सूर्य कहल्कै या खेल घर से बाहर भेलै। जितुवा त खेल घर से बाहर भेलै मगर कोनो साथी के विश्वास नै हैछेलै जे जितुवा सूर्य के बेटा चियै। यने जितुवा के सेहो विश्वास नै हैछेलै। उ राईत भैर नै सुतलै। तै दुवारे यै बात के परते लगावैले जितुवा महताईर के कहल्कै, "मैया हमरा सिधा-सामल ओरया दे, हम बाप के उद्देश मे जेबै"। जितुवा के महताईर कहल्कै "बौवा तोरा यी बात के कहल्कौ? तोहे नै ज्या सकविही, जैरके भसम भ्याजेबिही। नै जो"। मगर जितुवा जब आपन हठ नै छोरल्कै त महताईर कुछ सिधा सामल या रुपैयाँ पैसा ओर्या देल्कै और जितुवा आपन सिधा-सामल ल्याके बाप के उदेश मे चललै। जितुवा एक दिन चलल, हप्ता दिन चलल, महिनो दिन चलल आ चलैत-चलैत जब नाको दम भ्यागेलै तब सूर्य भगवान सोचलक जे यी आपन हठ नै छोरतै। तब सुरुज एकटा मनुस्य के भेष मे जितुवा के आगु मे ठारह भेलै आ पुछे लागलै के चहक बौबा? कते जाई चहक। तब जितुवा कहल्कै जे हमर नाम जितुवा चियै। हम सूर्य के बेटा चियै। हम बाप से भेटैले ज्यारहल चियै। यी बत सुईनके ऊ आदमी कहल्कै, बौवा घुम, घर जो। आई तक जते कोईयो ने ज्यासकल्कै वते तोहे केनंके जेबही ? जैरके भसम भ्या जेबही। येहेन जिध्द नै करै। मगर जितुवा कैहते रहलै कि हमर बाट छोड, हम जेबे करबै। तब ऊ लोग कहल्कै, बौंवा हमही सूर्य चियै। तोरे दर्शन दैले येलचियौ। ल्या आब लौट। घर जा। तब जितुवा कहल्कै जे बड नीक हम घर घुईम जेबै। सब के कहबै जे हम आपन बाप सूर्य से भेटके येलियै, त के पतियैतै ? ने त तोहे हमर संगे चल। ने त हम नै घुमबै, हम जेबे करबै। तब अन्त मे सूर्य कहल्कै ले त हम तोरा बर दैचियौ, तोहे घुम घर जो। आब से तोहर नाम जितमहान भेलौ। आब से जे बिबाहित जनीजाईत सब आसिन अन्हैरिया पक्ष सैन दिन सतमी तिथि मे लह्याके खेतै, रैब दिन अठमी तिथि मे निराहर उपास रहतै आ नम्मी तिथि सोम दिन पारन करैत नियम निष्ठापूर्वक यी तोहर ब्रत लेतै अर्थात् तोहर नामे जितिया ब्रत सम्पन्न करतै।

> आब से तोहर नाम जितमहान भेलौ। आब से जे बिबाहित जनीजाईत सब आसिन अन्हैरिया पक्ष सैन दिन सतमी तिथि मे लह्याके खेतै, रैब दिन अठमी तिथि मे निर हर उपास रहतै आ नम्मी तिथि सो म दिन पारन करैत नियम निष्ठापूर्वक यी तोहर ब्रत लेतै अर्थात् तोहर नामे जितिया ब्रत सम्पन्न करतै। वोकर बाल-बच्चा दीर्घायु हेतै, स्वस्थ हेतै, वीर तथा पराक्रमी हेतै तथा वोकर सब दिन उत्तरोतर प्रगति हेतै।

वोकर बाल-बच्चा दीर्घायु हेतै, स्वस्थ हेतै, वीर तथा पराक्रमी हेतै तथा वोकर सब दिन उत्तरोतर प्रगति हेतै। तब जितुवा ब्रत करैके बिधि बारे मे सब बात बुइझ लेल्कै और सत करया लेल्कै या हँसी खुशी आपन घर दिसन रवाना भेलै और सूर्यदेव वोहो वहैठो विलिन भ्यागेलै।

जितुवा बडी-हँसी खुशी घर येलै। आपन महताईर के गोड् लाग्लक या यी सब बात महताईर के सबिस्तार मे सुनैल्कै। तब महताईर वोहो बहौत खुशी भेलै आ आपन बेटा मे गर्व भेलै। यी बात राजा सालिवाहन सुईनके वोहो बहौत खुशी भेलै।

कुछ दिन के बाद मे जितिया पर्व के समयो आईब गेलै। राजा पुरा नगर मे यी जितिया ब्रत करैले ढोलहा पिट्या देल्कै। वै नगर के बिबाहित जनीजाईत सब आसिन सतमी तिथि सैन दिन आ-आपन डाला-डाली साजलक और लदी/ पोखैर मे लह्याके जितमहान बाबा के नियमपूर्वक पूजा क्याके ब्रत शुरु केल्कै, दोसर दिन फेन लदी मे लेह्या सोन्याके डाला-डाली मे पूजन सामग्री के राईखके जितिया कथा सुन्लक या जितमहान के पुजा केलक, तेहनं तेसर दिन अर्थात् नमी तिथि मे सब घर आगन केलक, लदी पोखैर मे लह्या के आगन मे चौका क्याके जितमहान के पूजा क्याके भगवान के अर्घ दैत गोड लागल्कै या अन्त मे पाँचटा बौटरा या पाँचवटा अरवा चौर बिना चिब्यसके घोटलक। जितमहान के गोड लागलक या यै साल ले जितिया ब्रत सम्पन्न केल्कै। जितिया ब्रत के फलफलाफल से सब कोई परिचित भेलै और यै किसिम से यी जितिया ब्रत पुरे देश बिदेश मे प्रचलित भ्यागेलै।

भाग २ : जितिया ब्रत के महत्व (चिल्हौरनी या स्यारनी के कथा)

एक समय के बात चियै। जितिया पावैन के समय येलै। कनकावती नगर के बियाहित जनीजाइत सब सतमी तिथि मे आवश्यक पूजन सामग्री से आ-आपन डाला- डाली साजलक या जितिया ब्रत लैले नर्मदा लदी के सर्वदा घाट मे जम्मा भेलै और स्नान, पुजापाठ करेलाग्लै।

यहै लदी के घाटे मे एकटा पाकैर के बडका गाछ रहै। वै गाछ पर उपर चिल्हौरनी खोता मे रहै छेलै त गाछ के धोईध मे सियारनी रहै छेलै। दुनु चिल्हौरनी या सियारनी बहौत दिन से एके गाछी मे रहैके करण दुनु मे खौब मित्रता रहै। जब घाट मे यी दृष्य सियारनी देखल्कै त चिल्हौरनी से पुछै छै से हे सखी आई कोन बात छै जे पुरे नगर के लोग डालाडाली तथा लवका-लवका कपडा ल्याके लदी घाट मे थाहाथैह करैछै। पैहने त येहेन नै देख्ने रहियै। तब चिल्हौंरनी कहै छै से हे सखी, अखनी सूर्य बंश मे जितमहान के उदय भेलै। नियम निष्ठापूर्वक वोकर ब्रत करने वोकर बाल-बच्चा दीर्घजीवी हेतै, स्वस्थ हेतै, सब काम मे सफल हेतै, वोकर उत्तरोतर प्रगति हेतै। अखनी वोकरे ब्रत लैले बियाहित जनीजाईत सब घाट मे जम्मा भेल्छै। सियारनी यी बात सुईनके बहौत खुशी भेलै या प्रस्ताव केल्कै "जे हे सखी, जब येहेन महत्वपूर्ण ब्रत चियै तब आपनौरके सेहो यी ब्रत लेबै त नै हेतै"। चिल्हौरनी स्वतः प्रस्ताव स्वीकार क्यालेल्कै। लोग सब पूजा क्याके घाट से घर गेलाके बाद चिल्हौरनी या सियारनी वोहो दुनु जन घाट मे येलै और लदी मे लहैल्कै, वैठो बचल-खुचल पुजन सामग्री से हँसी-खुशी पूजा क्याके जितिया ब्रत शुरु केल्कै। तकर बिहान के अठमी तिथि मे फेन नगरक जनीजाईत सब आपन डाला-डाली सजैलक और लदी घाट मे येलै। लदी मे सब गोरे लहैल्कै आ-आपन सामग्री साथ निराहर वहै पाकैर गाछ तर मे नीप पोईतके पूजा या कथा सुनैले बैठ गेलै। चिल्हौरनी या सियारनी सेहो लदी मे लहैल्कै आ कथा सुने लाग्लै। एवम् किसिम से सब गोरे कथा सुनल्कै, पूजा केल्कै आ अन्त मे सब गोरे आ-आपन घर गेलै। राईत भेलै, चिल्हौरनी और सियारनी वोहो सब आ-आपन ठाम मे सुतलै। मगर, वहै राईत मे वहै नगर मे एकटा साहुकार के बेटा मैर गेलै। साहुकार राईत मे मृत बेटा के वहै घाट मे ल्याके येलै और आइग लग्याके वहै जगह मे गाईरके घर चैल गेलै। यी घटना चिल्हौरनी और सियारनी देखैत रहै। जतेक-जतेक राईत हैत जाई भुख सब पवैन करनी के हैरान करै। सियारनी लगे मे साहुकार के बच्चा के गारल देख्के, वोकर जी से हर-हर पाईन खसै। एक त भुख दोसर मे लगे मे सिकार, सैहजे ने मन ब्याकुल हेतै। फेन चिल्हौरनी से डरो हेबै, जे चिल्हौरनी ने देख्ले। सियारनी फेन-फेन चिल्हौरनी से पुछै जे हे सखी सुतल चहक कि जागल ? चिल्हौरनी एक दाईब, दुईदाईब जवाब देल्कै जे जागले चियै। जब फेन तेसर दाईब पुछ्ल्कै त चिल्हौरनी के शंका बैरह गेलै जे कि बात चियै जे फेन-फेन पुछैये जे सुतल कि जागल। येबकी बेर चिल्हौरनी सुतल के बहाना क्या देल्कै। ऊ कुछो ने जबाब देल्कै त सियारनी अनुमान केल्कै जे चिल्हौरनी सुईत गेलै। आब त कोई नै देखत सोचैत साहुकार के बेटा के मौस खाईले घाट तरफ चैल देल्कै। एक त भुखल दोसर मे मौस, खौब अघ्या-अग्या के खेल्कै और कुछ मौस लेनौ धोंधैर मे येलै। सियारनी शंका हटाबैले फेन चिल्हौरनी से पुछल्कै जे हे सखी सुतल कि जागल। तब चिल्हौरनी कन्हिक देर से जबाब देल्कै जे आब जागलियै। सियारनी के शंका दूर भ्यागेलै जे हमर चलाकी चिल्हौरनी देखलक। तब सियारनी फेन पुछै छे जे हे सखी बड धुईया-ढेकार हैये। तब चिल्हौरनी कहै छै जे हे सखी भुखल मे येहनं हैछै। आब बिहान हेतै तब पारन करबै और खेबै। सब ठिक भ्याजेतै।

बिहान भेलै। नगर के जनीजाईत सब फेन आ-आपन डाला-डाली साजल्कै और पारन करैले सब गोरे लदी के घाट मे येलै। सब गोरे स्नान केल्कै, पूजा करैले चौका केल्कै, पूजा केल्कै , जितमहान बाबा के अर्घ देल्कै गोड लागल्कै और पाँचटा बौटरा या पाँचटा अच्छत बिना चिब्याके घोईट के ब्रत पूरा केल्कै। सब गोरे परसादी खेल्कै या आ-आपन घर ज्याके बृहत खान-पान तथा साथी सब से भेटघाट मे लाईग गेलै।

चिल्हौरनी आ सियारनी वोहो सब घाट मे ज्याके स्नान केल्कै, वैठो बचल-खुचल पूजा सामग्री से पूजा क्याके, भगवान के अर्घ देल्कै, गोड लागल्कै या पाँचटा बौटरा या पाँचटा अछत बिना चिब्याबे के घोटल्कै या परसादी ख्याके जितिया ब्रत पूरा केल्कै। मगर एकटा प्रश्न हरदम चिल्हौरनी के रैहरैह के हरान करै कि सियारनी के ब्रत त भ्रष्ट भ्यागेलै। यै चीज के परते केनं के लगैबै ? तहै से चिल्हौरनी प्रयाग तिर्थ जाईके प्रस्ताव करल्कै। सियारनी प्रस्ताव सहर्स स्वीकार क्याके दुनु गोरे तीर्थ करैले प्रयाग गेलै। प्रयाग मे खौब घुम-घाम केल्कै। सब देवी देवता के दर्शन केल्कै, घाट मे लहैल्कै और अन्त मे संयोग बस दुनु जन वहै ठाम प्राण त्यागल्कै। तीर्थ के प्रतापे दुनु जन मनुस तन मे नर्बदा लदी के दक्षिणी किनार मे अवस्थित कनकावती नगर मे एकटा महापण्डित महोपाध्याय के घर मे जेमा बेटी के रुप मे जलम लेल्कै। चिल्हौरनी भेलै जेठ बेटी जकर नाम भेलै शिलावती (सोमता) और सियारनी भेलै छोट बेटी जकर नाम भेलै कर्पुरावती (बेमता)। दुनु के जीवन खुशीपूर्वक बितैत दुनु गोरे जवान भेलै। पणिडत जी शिलावती के वहै नगर के महथा (मन्त्री) के बेटा से बियाह क्यादेल्कै और कर्पुरावती के बियाह वहै नगर के राजा मलयकेतु से क्यादेल्कै। दुनु बहैन आ-आपन सौसरा मे खूशीपूर्वक जीवन बिताबे लाग्लै। शिलावती के सातटा बेटा भेलै और सातो बेटा स्वस्थ, हष्टपुष्ट तथा वीर रहै। वने कर्पुरावती के सेहो सातटा बेटा भेलै या सातो बेटा मैर-मैर गेलै। तहै से कर्पुरावती रानी त रानी रहै मगर बाल-बच्चा नै रहने से बहौत दुःखी रहै।

जितिया के समय येलै। येबकी बेर रानी कर्पुरावती जितिया पावैन आपन जेठकी बहैन शिलावती संगे करैके योजना बनैल्कै। मगर शिलावती कर्पुरावती जरे ब्रत लैले नै तैयार भेलै। यी बात सुईनके रानी कर्पुरावती के बहौत तामस उठ्लै। उ बदला लैले आपन घर मे खटपरन द्यादेल्कै। जब राजा येलै त दासी से पता लाग्लै जे रानी खटपरन देने छै। राजा रानीलग गेलै या कारण पुछल्कै त रानी पहिने सत करैल्कै या जब राजा सत क्या देल्कै तब रानी कहल्कै जे काईल पारण दिना हमर जेठकी बहैन शीलावती के सातोटा बेटा के मुरी काईटके लाईब दे ने त हम आपन प्राण त्याग देबौ। राजा मने-मन कहै छै पापीनी तो यहैले सत करैला। राजा सत केने रहै तहै से आपन सेना पठ्याके शीलावती के बेटा सिकार के समय मे जंगल मे सातोटा बेटा के शीर काईटके कर्पुरावती के लाईब देल्कै। तब कर्पुराबती नीक से देखल्कै कि यी कही दोसरे आदमी के मुरी त नै चियै। जब वोकरा ठीक लाग्लै तब कर्पुरावती सातोटा मुरी के साफ क्याके , लवका हर्दियान कपडा मे बाईन्के सातटा लवका डाला मे राईखके शीलावती के घर मे पठ्या देल्कै जैसे वोहो जब आपन बेटा सब के मुरी देख्तै तब वोकर घर मे कन्नी-खिजनी शुरु हेतै या हमरा मन खुशी ह्यात्।

मगर शीलावती पूर्व जनम मे नियम-निष्ठापूर्वक जितिया ब्रत करने रहै जैके प्रतापे शीलावती के सब बेटा सकुशल रहलै या डाला मे पठ्याल मुरी सब सातटा नरियर के फल भ्यागेलै। शीलावती बहौत खुस भेलै या बेटा सब के कहल्कै जे रानी मौसी पारण करैले सातटा नरियर फल पठ्या देने छौ। वने कर्पुरावती दिदी के घर मे कन्नी-खजनी बुझेले जब आपन आदमी के पठैल्कै त पता लाग्लै जे वकर घर मे बडी हँसी-खुसी के माहौल छै। वोकर सब बेटा सब जिबते छै। जब रानी के यी बात सुने मे येलै त घर मे ऊ फेन बबाल मच्चा देल्कै। राजा से कहे लाग्लै तोहे हमरा ठगलिही। मोरल लोग केनंके जित हेतै। तब राजा कहल्कै जे तखनी नै चिनलिही। भ्यासकै जे पूर्व जनम मे ऊ कोनो नीक काम केने हेतै। तोहे गलत काम करने हेवही जै कारण तोहर बेटा मैर-मैर गेलौ या वोकर बेटा जिवते छै। तब रानी आरोप लगाबे लाग्लै जे हमर बहैन डाईन छै। वह्या हमर बेटा सब के खेलक। वकरा बोलाब और कडा से कडा दण्ड देलजाय। रानी के आग्रह अनुसार शीलावती के राजदरबार मे बोलैल्कै। दरवार मे सब के सामने शीलावती विन्ती केल्कै जे हे पंच भगवान हम डाईन नै चियै। पूर्व जलम मे हम चिलहौर रहियै या हमर बहैन सियार रहै। हम सब एके गाछ मे रहियै। हम सब संगे जितिया ब्रत लेने रहियै। ऊ उपास के राईत मे साहुकार के बेटा के मौस खेल्कै। एवम् किसिम से वोकर ब्रत भ्रष्ट भ्यागेलै। वहै कारण से वोकर बेटा मैर-मैर जाईछै। हम डाईन नै चियै। यदि नै विश्वास हैछ त गाई के गोबर से चौका करल जाय। हम दुनु बहिनी चौका मे बैठ के भगवान के नामे उल्टी करबै, बात साफ भ्या जेतै। तब जाँच मे शीलावती बोकरल्कै अकुरी -अजियर या कर्पुरावती बोकरल्कै साहुकार के बेटा के मौस। पंच भगवान के चीत बुईझ गेलै। शीलावती निर्दोष साबित भेलै या कर्पुरावती दोषी। अतवेक नै शीलावती कर्पुरावती के कहल्कै तोहे हमर संगे नर्बदा लदी के शरवदा घाट मे चल। तोरा आपने सब चीज थाह भ्या जेतौ। दुनु गोरे घाट मे येलै। लदी मे लहैल्कै। शीलावती करपुरावती से पुछल्कै ? कि पूर्व जलम के बात याद भेलौ ? उ पाकैर के गाछ देख्या देल्कै, धोंधैर देख्या देल्कै जै मे सियारनी रहै छेलै। रसे- रसे कर्पुरावती के सब बात याद येलै। वकरा बहौत पश्चाताप भेलै। शीलावती से गल्ती ले माफी मागल्कै और वहै ठाम मे प्राण त्याग केल्कै। राजा वकर सब संस्कार केल्कै और आपन राजपाट संचालन करेलागलै। शीलावती के बहौत दुःख लागलै। वोहो घर येलै और आपन नीत काम मे लाईग गेलै। अस्तु

काठमाडौंके तीन ठाममे जितिया महोत्सव

काठमाडौं। तराईके आदिवासी थारू समुदायके महिलासब ४ बछरके बाद यीटामैर फेनसे खर जितिया (शुद्ध जितिया) मनाइछै। काठमाडौ उपत्यकामे बसोबास करैबला थारु महिलाहसब यैसाल तीन ठाममे जितिया महोत्सवके कार्यक्रम राख्नेछै।

थारू महिला समाज काठमाडौंके भृकुटीमण्डपके पर्यटन बोर्डमे, थारू महिला सभा काठमाडौं उपत्यका समिति राष्ट्रिय नाँचघर जमलमे या थारु कला तथा विकास मञ्च ललितपुरके कुपण्डोलमे एके दिन जितिया महोत्सवके कार्यक्रम राख्नेछै।

आपन सन्तानके दीर्घायु, सुखसमृद्धि या मनोकामना पूर्ण हेबे कैहके थारु महिलासब यी जतियाके व्रत लेनेछे। यीटा दाइब लबका पबैनकर ीसब पैहैन्काचोटी जितिया उठाइनेछै। संस्कृतिविद भुलाई चौधरीके अनुसार खर जितियामे मात्रे लबका बियाह भ्याल थारू जितियाके सुरुवात केरैले पाबैछै।

'थारू समुदायमे महिलासबके बरका पावैन चिये जितिया। महिलासब आपन सन्तान या घरबलाके दीर्घायु, सुखसमृद्धि या स्वास्थके कामना करैले भुख सैहैछै। थारू समुदायमे जैहिया लोक कोनो दुर्घनास संजोगवश बैचजाइछै ताब कैहैछै, 'तोहर महताइर खर दिन जितिया पाथने रौहौ। ताब तोहे बाचलिही। खासकैरके पुरुबमे झापासे पछिममे नवलपरासी जिल्लामे धुमधामसे जितिया पावैन मनाइछै। झापा, मोरङ, सुनसरी, उदयपुर, सप्तरी, सिरहा, महोत्तरी, सर्लाही, रौतहट, बारा, पर्सा, चितवन या नवलपरासीके महिलासब आपन अपान जिल्लामे जितियाके कार्यक्रम राख्नेछे। खास कैरके चितवन या नवलपुरके थारु महिलासब जितियामे झम्टा नाँच गान कैरैछे। काठमाडौंमे थारु महिलासब वि.सं. २०६२ सालसे जितिया मनाइत येल्छै। थारु महिला समाजके अध्यक्ष गीता चौधरी कैहैछै, 'थारु महिलाहसब विगत १५ वछरसे काठमाडौंमे सब बछरसे जितिय पावैनके राष्ट्रिय महोत्सवके रुपमे मनाइत येल्चियै। यीटा बछर पर्यटन बोर्डके हलमे जितिया महोत्सव कार्यक्रम राख्नेचियै।' जितिया पावैनके पहैनका दिन लाई/लहाइ अर्थात लेहाके खाइबला दिन (शैन दिन) वर्तालु महिलासब लगपासके कुपा, पोखैरमे ल्याहाके घेराके पतामे पिना खैर, माइट लगाइछै।

पावैनके दोसर दिन रैब दिना महिलासब निराहार भुख सैहैछै। वै दिन महिलासब गामेके कानो एक ठाममे जम्मा भ्याके भगवान जितवाहानके कथा सुनैछै। जितियाके अन्तिम या पारन (समापन)के दिन भुख सहल महिलासब फेनो लदी, पोखैर या कुपामे ल्याहाके पवित्र ठाममे दही चुरा, चिनी, बौटरा चर्ह्याके जितिया पावैन समापन करैछै।

जीतिया, जीतना बहैनके !

नन्दलाल चौधरी

जीतिया पावैन उंच नीच,
गरीब धनीक, कारी गोर।
टोल परोसमें सैब मनाबे,
कोन बजिया कोन थउर।
पावैन त जीतनो बहैनके,
मगर गरिबके कथा बेथा।
आभावसे भोरल जीवनमें,
डिहो डाबरने जाय जेथा।
जीतना छै केहेन लापरबाह,
बहैनके आइनके जीतियामें।
भोइर भोइर दिन तास खेले,
पैसा हारे जुवा चोखियामे।
और सब खौके वोठघन ख्या,
तरुवा भुजुवा माछ आ वोल।
वोकर भाइके फुटल चुइल्ह में,
भादोके भीजल छौर आ बौल।
जीतिया पावैन वोहो करतै,
चाहे पिन्हके फाटल पुरान।
संस्कारसे त वोहो बान्हलछै
वोकरो राखैके छै घरके मान।
भुखलेमें भुख आइ सहतै उ,
समयसे सम्झौता कैर कैरके।
दुर्भागके माइर त सहै परतै,
जीतौ रहैत आइ मैर मैरके।
निर्धन धनीकके केहेन संसार,
पावैनोमें खोजेपरे अधिकार।
फैसला नीकसे तूही करीयह,
अैठना केकर जीत आ हार।
आशिषमें कोनो भेद ने आबे,
जीतियामें हे जीत महान्।
जर्जर जीवनसे मुक्ति मिले,
जीतनो बहैनके हेबे यशगान।

(पटेरवा, सप्तरी, हाल : टिकाथली, काठमाडौं)

पृष्ठ संयोजकः सहदेव चौधरी, **सह-संयोजकः** अन्जना चौधरी, **पत्राचार ठेगानाः** नयाँ नेपाल, **गोरखापत्र दैनिक**, पो.ब.नं.२३, काठमाडौं email: pressnepali@gmail.com